

अपिभाग (अपि + भाग) adj. *Antheil habend*: या देवता अपिभागास्ता भागधेयेन व्यर्धयेत् CAT. Br. 13, 3, 5, 1. तत्रमेव तद्विषयपिभागं करोति तस्माद्यद्विशस्तस्मिन्नात्रयोऽपिभागः 9, 1, 4, 18.

अपिवान्यवत्सा s. अभिवान्यवत्सा.

अपिब्रत (अपि + ब्रत) adj. *beim Gelübde beteiligt, blutsverwandt*: तस्माद्योऽपिब्रतः (SĀJ.: ब्रतं भोजनम् । यज्ञमानेन सह प्राप्तभोजनः । बन्धुवर्गः) स्यात्सोऽन्वारभेत CAT. Br. 3, 6, 3, 2. अपिब्रताश्चान्वारभते यज्ञमानम् KĀTJ. Çr. 8, 6, 36. Sch.: येषां यज्ञमानब्रतेऽपित्वमस्ति दायार्थेनाविभक्ता इति पितृभूतिः । अपिब्रता गोत्रज्ञा इति कर्कः । संसृष्टे साधारणं कर्म येषां तेऽपिब्रता अविभक्ता दायदाः ते ह्येकेनापि कृष्यादिकर्म कृतं सर्व उपजीवतीति हरिस्वामिनः ।

अपिशर्वर (von अपि + शर्वर) 1) adj. *an die Nacht angrenzend, am Ende der Nacht befindlich*: अपि शर्वर्या अनु स्मसीत्यब्रुवन्नपिशर्वराणि खलु वा एतानि कुन्दासीति ह स्माह AIR. Br. 4, 5. — 2) n. *Frühmorgen*: तं पद्मे पशवः समासते समिद्धमपिशर्वरे RV. 3, 9, 7. मम प्रपित्वे अपिशर्वरे वसवा स्तोमोसो अवृत्सत 8, 1, 29. S. ROTH zu NIR. S. 34.

अपिशल (अपि + शल) m. N. pr. eines Mannes: अपिशलाः die Nachkommen des A. Verz. d. B. H. 55, 6. Davon अपिशलि.

अपिशम् (von शम् mit अपि) *das Aufschlitzen*: पुरा नाभ्या अपिशसः (abl.) AIR. Br. 2, 6.

अपिकृति s. धा, दधाति mit अपि.

अपी f. von अप्य, s. d.

अपीच्यं (von अप्यञ्च wie अनुच्यं von अनुचञ्च) adj. *geheim, verborgen* NAIGH. 3, 25. NIR. 4, 25. यदावियर्दपीच्यं देवोसो अस्ति डुष्कृतम् RV. 8, 47, 13. 39, 6. 41, 5. 8. अपीच्येन मनसोत विह्वयो 10, 53, 11. 12, 8. 1, 84, 15. 2, 35, 11. 7, 60, 10.

अपीत्र (von त्रु mit अपि) adj. *treibend*: उपासानक्ता जगतामपीत्रुवा RV. 2, 31, 5.

अपीति (von इ mit अपि) f. 1) *das Einholen, Erreichen*: पुरा यत्सूरस्तमसो अपीतेस्तमद्विवः फल्गिं कृतिमस्य RV. 1, 121, 10. — 2) *das Eingehen in Etwas, Verschwinden*: सोऽनेन मिथुनेनात्मनैतं मिथुनमग्निमप्येति ॥ एषात्रापीतिः CAT. Br. 10, 1, 4, 8—11. निनोति ह वा इदं सर्वमपीतिश्च भवति MĀND. Up. 11. — Vgl. अप्यव.

अपीनस (von अपि + नस्) m. *verstopfte Nase, Schnupfen* BHARATA zu AK. 2, 6, 2. 2. SUCR. 2, 369, 3. 11. — Vgl. पीनस.

अपीव्य adj. *sehr schön* (अतिसुन्दर): अपीव्यदर्शनं शश्वत्सर्वलोकानमस्कृतम् । सत्तं वयसि कैशोरे भृत्यानुग्रहकारणम् ॥ BHĀG. P. im ÇKDR. — Vielleicht ein Fehler für अपीच्य.

अपु = रूप NAIGH. 3, 7, v. 1. — Vgl. अमु.

अपुम् (3. अ + पुम्) m. (nom. अपुमान्) *Nichtmann, Eunuch* M. 3, 49.

INDR. 5, 50. Davon nom. abstr. अपुस्तव *Mannlosigkeit* ebend. 58.

अपुच्छ (von 3. अ + पुच्छ) f. N. eines Baumes, *Dalbergia Sissoo* ROZB., ÇABDAK. im ÇKDR. — S. शिशापा.

1. अपुत्र (3. अ + पुत्र) m. *Nicht-Sohn* CAT. Br. 14, 9, 2, 20. = BRH. ĀR. Up. 6, 3, 12.

2. अपुत्र (wie eben) adj. f. *sohnlos*: पत्नी CAT. Br. 5, 3, 1, 13. PARĪÇ. in DĀJ. 271, 9. M. 5, 160. 9, 127. 131. 132. 135. 185. HT. I, 120. = MRĀKĪH. 2, 9, 10. am Anf. eines comp. पूजने गाणा काष्ठादि, eines der 34 जातक

Çākjamuni's Vjāpi zu H. 233. Davon nom. abstr. अपुत्रता CAT. Br. 10, 1, 1, 10.

अपुत्रक (von 3. अ + पुत्र) adj. *sohnlos* KĀTJ. 13, 57.

अपुत्रिक (von 3. अ + पुत्रिका) adj. *sohnlos* (sic!) DEVALA in DĀJ. 272, 2. Der Erklärer bemerkt: पुत्रिकापदं पुत्रापलक्षणम् । Es ist wohl अपुत्रकस्य zu lesen.

अपुत्र (3. अ + पुत्र) adv. *ein für allemal*: अनानुकृत्यमपुत्रश्चकार RV. 10, 68, 10.

अपुनर्दीयमान (3. अ + पुनर् - दीयमान, part. praes. pass. von दा; द-दाति) adj. *was nicht zurückgegeben wird* AV. 12, 5, 5. 6.

अपुनर्भव (3. अ + पु) m. 1) *Nichtwiederkehr*: रोगापाम् KARAKA im ÇKDR. — 2) *die letzte Befreiung der Seele* H. 74.

अपुनर्भाव (3. अ + पु) m. *das Nichtwiedergeborenwerden* PRAB. 108, 1.

अपुरोऽनुवाक्यक (von 3. अ + पुरोऽनुवाक्या) adj. *ohne पुरोऽनुवाक्या* (s. d.): प्रयाजाः CAT. Br. 14, 4, 1, 12.

अपुरोऽरुक्क (von 3. अ + पुरोरुक्) adj. *ohne पुरोरुक्* (s. d.): तं वा अपुरोरुक्कं गृह्णाति । उक्तं हि पुरोरुग्मि पुरोरुक् CAT. Br. 4, 2, 3, 7. 9. 4, 1, 13. 2, 11. 3, 5.

अपुष्ट (3. अ + पुष्ट) adj. 1) *nicht genährt, nicht fett*. — 2) *leise*, vom Schluchzen H. 1402.

अपुष्प (3. अ + पुष्प) adj. f. *blüthenlos* RV. 10, 71, 5. 97, 15. M. 1, 47.

अपुष्पफलद (3. अ + पुष्प - फल - द) 1) adj. *keine Blumen und keine Früchte gebend*. — 2) m. N. einer Pflanze, *Artocarpus integrifolia* (पनस), RĀGĀN. im ÇKDR.

अपूत (3. अ + पू) adj. 1) *nicht gereinigt*: एतैरपूतैर्विधिवत् M. 2, 40. — 2) *unrein*: अपूतो वा एषोऽनेद्यो पदश्च CAT. Br. 13, 1, 1, 1. यश्चापूत इव मन्यते KĀTJ. Çr. 22, 4, 29.

अपूर्व m. 1) *Kuchen* AK. 2, 9, 48. H. 398. यस्तै अय्य कृणावद्द्रशोचेऽपूवं घृतवत्तम् RV. 10, 43, 9. 3, 52, 7. त्रीक्षिमय, वयमय CAT. Br. 2, 2, 3, 12. 13. 4, 2, 5, 19. त्रीक्ष्यपूव KĀTJ. Çr. 4, 11, 8. पञ्चापूव adj. AV. 3, 29, 4. — M. 5, 7. JĀN. 1, 173. अपूवाष्टका Verz. d. B. H. No. 1071. — 2) *Honigwaben* (?) KĀHĀND. Up. 3, 1, 1. — 3) *Waizen* RĀGĀN. im ÇKDR. — Vgl. पूय und ὄμυρον.

अपूर्वनाभि (अपूय + नाभि) adj. *dessen Nabel (Mitte) durch einen Kuchen gebildet oder damit verziert ist*: अपूर्वनाभिं कृत्वा यो ददाति शतौदंनम् AV. 10, 9, 5.

अपूर्वमय (von अपूय) adj. *अपूर्वमयं पर्व* P. 5, 4, 21, Sch.

अपूर्ववत् (wie eben) adj. *von Kuchen begleitet*, vom Soma RV. 3, 52, 1. 8, 80, 2. चरुः AV. 18, 4, 16.

अपूर्वापिकृत (अपूय + अपि) adj. *mit Kuchen bedeckt*: कुम्भः AV. 18, 3, 68.

अपूर्वीय (von अपूय) adj. P. 5, 1, 4.

अपूर्य्य = अपूर्वीय P. 5, 1, 4. m. *Waizenmehl* ĠĀṬĀDH. im ÇKDR.

अपूरणी (3. अ + पू) f. (zum Einschlag untauglich) der Wollbaum, *Salmatia malabarica* Sch. u. Endl., ÇABDAK. im ÇKDR. — S. शात्मलि.

अपूरुष (3. अ + पू) adj. *unbelebt*: दाहू RV. 10, 133, 3.

अपूरुषघ्न (3. अ + पूरुष - घ्न) adj. *nicht Männer tödend*, von Indra RV. 1, 133, 6.

अपूर्णा (3. अ + पूर्णा) adj. *nicht voll*: चरुमपूर्णा KĀTJ. Çr. 4, 1, 5. 7. *nicht ganz, gebrochen*, von einer Zahl COLEBR. Alg. 13.